THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.43

छत्रपति शाहूजी महाराज का व्यावसायिक शिक्षा में योगदान : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

नीरज वर्मा[1], डॉ० अखिलेश पटेल[2]

1.शोध अध्येता, डॉ० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या (उ०प्र०), भारत

2.एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, रामनगर पी०जी० कॉलेज रामनगर, बाराबंकी (उ०प्र०), भारत

Email: professorakhilesh@gmail.com

सारांश (Abstract)

राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज (1874–1922) आधुनिक भारत के उन महान समाज सुधारकों एवं दूरदर्शी शासकों में से हैं जिन्होंने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक उन्नति तथा सामाजिक न्याय का सबसे प्रभावी साधन माना। उन्होंने यह अनुभव किया कि केवल सैद्धांतिक अथवा पारंपरिक शिक्षा समाज की आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान नहीं कर सकती। ऐसी शिक्षा आवश्यक है जो व्यक्ति को रोजगार, आत्मनिर्भरता तथा सम्मानजनक जीवन जीने की क्षमता प्रदान करे। इसी कारण उन्होंने अपने शासनकाल में व्यावसायिक, तकनीकी, औद्योगिक तथा कृषि शिक्षा के विकास पर विशेष बल दिया।

शाहूजी महाराज का मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास तथा उसे उत्पादन एवं रोजगार से जोड़ना भी है। उन्होंने दलितों, पिछड़े वर्गों, किसानों, श्रमिकों तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए छात्रवृत्ति, छात्रावास, निःशुल्क शिक्षा तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण की अनेक योजनाएँ प्रारम्भ कीं। उनके प्रयासों ने समाज के वंचित वर्गों को शिक्षा से जोड़ने के साथ-साथ आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

वर्तमान समय में जब भारत राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, कौशल भारत मिशन, स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत जैसी योजनाओं के माध्यम से कौशल-आधारित एवं रोजगारोन्मुख शिक्षा पर बल दे रहा है, तब शाहूजी महाराज की शैक्षिक दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में उनके व्यावसायिक शिक्षा संबंधी विचारों, नीतियों, कार्यक्रमों तथा उनके दीर्घकालीन प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द: राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज, व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास, सामाजिक न्याय, आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति।

प्रस्तावना: भारत का आधुनिक शैक्षिक इतिहास अनेक महान शिक्षाविदों एवं समाज सुधारकों के योगदान से समृद्ध हुआ है। इनमें राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने ऐसे समय में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया जब भारतीय समाज जातिगत भेदभाव, आर्थिक असमानता तथा अशिक्षा जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा था।

26 जून 1874 को जन्मे शाहूजी महाराज ने 1894 में कोल्हापुर राज्य का शासन संभाला। शासन संभालते ही उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि उनकी प्राथमिकता केवल प्रशासनिक सुधार नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग तक शिक्षा पहुँचाना है। उनका मानना था कि कोई भी राष्ट्र तभी विकसित हो सकता है जब उसके सभी नागरिक शिक्षित, कुशल तथा आत्मनिर्भर हों।

उनकी शिक्षा नीति का मूल आधार सामाजिक न्याय था। वे शिक्षा को किसी विशेष वर्ग का विशेषाधिकार नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार मानते थे। इसी कारण उन्होंने दलितों, पिछड़े वर्गों, महिलाओं तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को शिक्षा से जोड़ने के लिए अनेक क्रांतिकारी कदम उठाए।

शाहूजी महाराज का यह भी विश्वास था कि केवल पुस्तक आधारित शिक्षा समाज के विकास के लिए पर्याप्त नहीं है। शिक्षा तभी सार्थक होगी जब वह व्यक्ति को रोजगार योग्य बनाए, उसके कौशल का विकास करे तथा उसे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाए। इसी सोच के कारण उन्होंने व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाया।

आज विश्वभर में कौशल-आधारित शिक्षा, उद्यमिता, स्टार्टअप संस्कृति तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण को शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग माना जा रहा है। आश्चर्य की बात यह है कि इन सिद्धांतों का व्यावहारिक स्वरूप शाहूजी महाराज ने एक शताब्दी पूर्व ही प्रस्तुत कर दिया था। यही कारण है कि उन्हें भारतीय व्यावसायिक शिक्षा के अग्रदूतों में स्थान दिया जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य

वर्तमान समय में भारत बेरोजगारी, कौशल-अंतराल (Skill Gap) तथा शिक्षा और रोजगार के बीच असंतुलन जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। बड़ी संख्या में विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद रोजगार प्राप्त नहीं कर पाते क्योंकि उनकी शिक्षा व्यावहारिक कौशल से पर्याप्त रूप से जुड़ी नहीं होती।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भी इस समस्या को स्वीकार करते हुए विद्यालय स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास को शिक्षा का अनिवार्य भाग बनाने की अनुशंसा की है। ऐसे समय में शाहूजी महाराज के विचारों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

उन्होंने लगभग एक शताब्दी पूर्व ही यह स्पष्ट कर दिया था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं होना चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी कौशल प्रदान करना भी होना चाहिए। उनके अनुसार शिक्षा तभी सफल मानी जाएगी जब वह व्यक्ति को स्वावलंबी बनाए तथा समाज के आर्थिक विकास में योगदान दे।

इस शोध का औचित्य इसी तथ्य में निहित है कि शाहूजी महाराज की व्यावसायिक शिक्षा संबंधी अवधारणाएँ आज भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत उपयोगी एवं प्रासंगिक हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज की शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन करना।
2. व्यावसायिक शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
3. व्यावसायिक, तकनीकी एवं कृषि शिक्षा के विकास में उनके योगदान का मूल्यांकन करना।
4. सामाजिक न्याय एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता के संदर्भ में उनकी शिक्षा नीति का अध्ययन करना।
5. वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एवं कौशल विकास कार्यक्रमों के संदर्भ में उनके विचारों की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना।

शोध-विधि (Research Methodology)

यह शोध मुख्यतः **ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक (Historical and Descriptive)** शोध-विधि पर आधारित है।

इस अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें प्रकाशित पुस्तकें, शोध-पत्र, सरकारी दस्तावेज, महाराष्ट्र शासन द्वारा प्रकाशित सामग्री, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्टें तथा विभिन्न विद्वानों के शोध आलेख सम्मिलित हैं।

संकलित सामग्री का विश्लेषण गुणात्मक (Qualitative) पद्धति द्वारा किया गया है। उपलब्ध तथ्यों का तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक अध्ययन करते हुए शाहूजी महाराज के व्यावसायिक शिक्षा संबंधी योगदान का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज का जीवन एवं शैक्षिक दर्शन

राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज का जन्म 26 जून 1874 को महाराष्ट्र के एक प्रतिष्ठित मराठा परिवार में हुआ। वे बाल्यावस्था से ही अत्यंत संवेदनशील, प्रगतिशील तथा समाजहितैषी प्रवृत्ति के थे। कोल्हापुर राज्य का शासन संभालने के पश्चात उन्होंने अपने प्रशासन का केंद्र शिक्षा, सामाजिक न्याय तथा आर्थिक विकास को बनाया।

उनका मानना था कि किसी भी समाज की उन्नति का वास्तविक आधार शिक्षा है। परंतु वे ऐसी शिक्षा के पक्षधर नहीं थे जो केवल परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने तक सीमित हो। उनके अनुसार शिक्षा व्यक्ति के जीवन को उपयोगी, उत्पादक एवं आत्मनिर्भर बनाने वाली होनी चाहिए।

उनकी शिक्षा-दृष्टि चार प्रमुख आधारों पर आधारित थी—

- शिक्षा का सार्वभौमिक अधिकार।
- सामाजिक समानता एवं सामाजिक न्याय।
- व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा का विस्तार।
- शिक्षा के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता।

इन्हीं सिद्धांतों के आधार पर उन्होंने अनेक विद्यालयों, छात्रावासों, छात्रवृत्ति योजनाओं तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को प्रोत्साहित किया। उनका उद्देश्य केवल शिक्षित समाज का निर्माण नहीं था, बल्कि ऐसा समाज बनाना था जो आर्थिक रूप से सक्षम, सामाजिक रूप से समान तथा नैतिक रूप से जागरूक हो।

व्यावसायिक शिक्षा की अवधारणा

व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) से आशय ऐसी शिक्षा से है जो शिक्षार्थी को किसी विशिष्ट व्यवसाय, उद्योग, कृषि, तकनीकी कार्य, सेवा क्षेत्र अथवा उद्यमिता के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल तथा दक्षता प्रदान करती है। इसका उद्देश्य केवल सैद्धांतिक ज्ञान देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक जीवन के लिए तैयार करना, उन्हें रोजगार योग्य बनाना तथा स्वरोजगार के लिए सक्षम करना है।

भारतीय शिक्षा परंपरा में लंबे समय तक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बौद्धिक विकास तथा प्रशासनिक सेवाओं के लिए मानव संसाधन तैयार करना माना जाता रहा। औपनिवेशिक काल में यह प्रवृत्ति और अधिक बढ़ गई। परिणामस्वरूप शिक्षा का संबंध उत्पादन, उद्योग, कृषि तथा स्थानीय व्यवसायों से कमजोर होता गया। इससे एक ओर शिक्षित बेरोजगारी बढ़ी, तो दूसरी ओर समाज में कुशल श्रमिकों और प्रशिक्षित तकनीकी मानव संसाधन की कमी बनी रही।

राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज ने इस समस्या को बहुत पहले समझ लिया था। उनका मानना था कि शिक्षा तभी सार्थक होगी जब वह व्यक्ति को आजीविका अर्जित करने योग्य बनाए। इसलिए उन्होंने व्यावसायिक शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था का अभिन्न अंग बनाने पर बल दिया। उनकी दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य केवल "ज्ञान" नहीं, बल्कि "ज्ञान और कौशल का समन्वय" था।

शाहूजी महाराज का व्यावसायिक शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण

शाहूजी महाराज का मानना था कि समाज की उन्नति केवल उच्च शिक्षा से नहीं, बल्कि कौशलयुक्त एवं उत्पादक मानव संसाधन के निर्माण से होती है। वे चाहते थे कि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी रुचि एवं क्षमता के अनुसार किसी न किसी व्यवसाय, तकनीकी कार्य, कृषि अथवा उद्योग से जुड़ सके।

उनके विचारों में व्यावसायिक शिक्षा के निम्नलिखित प्रमुख तत्व स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं—

- शिक्षा और रोजगार का समन्वय।
- शिक्षा एवं उत्पादन का संबंध।
- कौशल विकास पर बल।
- श्रम की गरिमा का सम्मान।
- स्वरोजगार एवं उद्यमिता को प्रोत्साहन।
- सामाजिक समानता के माध्यम के रूप में व्यावसायिक शिक्षा।

उनकी यह दृष्टि आधुनिक कौशल विकास की अवधारणा के अत्यंत निकट है।

1. तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहन

राजर्षि शाहूजी महाराज ने अपने शासनकाल में तकनीकी शिक्षा के महत्व को समझते हुए ऐसे संस्थानों को प्रोत्साहित किया जहाँ विद्यार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त हो सके। उनका मानना था कि तकनीकी शिक्षा उद्योगों के विकास तथा आर्थिक प्रगति की आधारशिला है।

उन्होंने बढ़ईगिरी, धातु-कार्य, मशीन संचालन, वस्त्र निर्माण, हस्तशिल्प तथा अन्य तकनीकी कार्यों से संबंधित प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया। इससे युवाओं में रोजगार प्राप्त करने की क्षमता विकसित हुई तथा स्थानीय उद्योगों को प्रशिक्षित मानव संसाधन उपलब्ध हुआ।

आज जब भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, ऑटोमेशन तथा डिजिटल तकनीकों की ओर अग्रसर है, तब भी तकनीकी शिक्षा का मूल उद्देश्य वही है जिसे शाहूजी महाराज ने एक शताब्दी पूर्व समझ लिया था—कौशलयुक्त मानव संसाधन का निर्माण।

2. औद्योगिक शिक्षा का विकास

औद्योगिक विकास किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण आधार होता है। शाहूजी महाराज ने यह अनुभव किया कि यदि युवाओं को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण दिया जाए तो बेरोजगारी कम होगी तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी।

उन्होंने कुटीर उद्योगों, हस्तशिल्प, वस्त्र निर्माण, धातु उद्योग तथा अन्य उत्पादन आधारित गतिविधियों को प्रोत्साहित किया। उनका उद्देश्य केवल उद्योग स्थापित करना नहीं था, बल्कि समाज के युवाओं को उत्पादन प्रक्रिया से जोड़ना भी था।

औद्योगिक शिक्षा के माध्यम से उन्होंने श्रम के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने का प्रयास किया। वे मानते थे कि कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं होता; प्रत्येक कार्य समाज के विकास में समान रूप से महत्वपूर्ण है।

3. कृषि शिक्षा को बढ़ावा

कोल्हापुर राज्य की अधिकांश जनता कृषि पर निर्भर थी। इसलिए शाहूजी महाराज ने कृषि शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया। उनका विचार था कि यदि किसान आधुनिक कृषि तकनीकों से परिचित होंगे तो उत्पादन में वृद्धि होगी तथा उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

उन्होंने कृषि में वैज्ञानिक पद्धतियों, उन्नत बीजों, सिंचाई, पशुपालन तथा कृषि उपकरणों के उपयोग को प्रोत्साहित किया। किसानों एवं ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने के प्रयास किए गए ताकि कृषि केवल परंपरागत अनुभव पर आधारित न रहकर वैज्ञानिक ज्ञान से भी संचालित हो।

वर्तमान समय में "स्मार्ट एग्रीकल्चर", "प्रिसीजन फार्मिंग" तथा "कृषि कौशल विकास" की अवधारणाएँ उसी दिशा का विस्तार हैं जिसकी आधारशिला शाहूजी महाराज ने अपने समय में रखी थी।

4. कौशल विकास (Skill Development) की अवधारणा

आज पूरे विश्व में "स्किल डेवलपमेंट" आर्थिक विकास की आधारशिला माना जाता है। भारत सरकार भी कौशल भारत मिशन के माध्यम से युवाओं को रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण प्रदान कर रही है।

राजर्षि शाहूजी महाराज ने बहुत पहले ही इस सिद्धांत को व्यवहार में उतारा था। उनका मानना था कि प्रत्येक विद्यार्थी में कोई न कोई प्रतिभा एवं कौशल होता है। शिक्षा का कार्य उस कौशल को पहचानना तथा उसका विकास करना है।

उन्होंने विद्यार्थियों में कार्यकुशलता, अनुशासन, परिश्रम, उत्पादन क्षमता तथा आत्मविश्वास विकसित करने पर बल दिया। उनके अनुसार कुशल व्यक्ति स्वयं भी रोजगार प्राप्त कर सकता है और दूसरों को भी रोजगार दे सकता है।

5. वंचित वर्गों को व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ना

शाहूजी महाराज का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह था कि उन्होंने व्यावसायिक शिक्षा को केवल उच्च वर्गों तक सीमित नहीं रहने दिया। उन्होंने दलित, पिछड़े वर्गों तथा आर्थिक रूप से कमजोर समुदायों के विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान किए।

उन्होंने छात्रवृत्तियाँ, आर्थिक सहायता तथा निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की। इससे अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थी आर्थिक अभाव के कारण शिक्षा से वंचित नहीं रहे। यह कदम सामाजिक न्याय की दिशा में अत्यंत क्रांतिकारी था।

उनकी नीति का उद्देश्य केवल शिक्षित समाज का निर्माण नहीं, बल्कि आर्थिक रूप से सशक्त समाज का निर्माण भी था।

6. छात्रावासों की स्थापना

शाहूजी महाराज ने विभिन्न सामाजिक वर्गों के विद्यार्थियों के लिए छात्रावासों की स्थापना कराई। इन छात्रावासों में विद्यार्थियों को केवल रहने की सुविधा ही नहीं, बल्कि अध्ययन का अनुकूल वातावरण भी उपलब्ध कराया गया।

ग्रामीण एवं गरीब परिवारों के विद्यार्थियों के लिए यह व्यवस्था अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुई। छात्रावासों ने व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा तक उनकी पहुँच को आसान बनाया।

7. छात्रवृत्ति एवं आर्थिक सहायता

आर्थिक अभाव शिक्षा प्राप्त करने की सबसे बड़ी बाधाओं में से एक था। शाहूजी महाराज ने इस समस्या का समाधान छात्रवृत्ति योजनाओं के माध्यम से किया।

उन्होंने निर्धन, पिछड़े तथा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता प्रदान की। इससे वे बिना आर्थिक चिंता के अपनी शिक्षा पूर्ण कर सके। विशेष रूप से व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी प्रोत्साहन दिया गया।

8. रोजगारोन्मुख शिक्षा का समर्थन

शाहूजी महाराज ऐसी शिक्षा व्यवस्था के समर्थक थे जिसका सीधा संबंध रोजगार से हो। उनका मानना था कि विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में केवल सैद्धांतिक ज्ञान देना पर्याप्त नहीं है; विद्यार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए।

वे चाहते थे कि शिक्षा पूरी करने के बाद युवा रोजगार खोजने वाले न बनें, बल्कि अपने ज्ञान और कौशल के आधार पर स्वरोजगार स्थापित करने में सक्षम हों।

उनका यह दृष्टिकोण आज की उद्यमिता (Entrepreneurship), स्टार्टअप संस्कृति तथा "आत्मनिर्भर भारत" की अवधारणा से अत्यंत निकट है।

9. श्रम की गरिमा (Dignity of Labour) पर बल: भारतीय समाज में लंबे समय तक शारीरिक श्रम को निम्न समझा जाता था। शाहूजी महाराज ने इस मानसिकता का विरोध किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि श्रम ही समाज की प्रगति का आधार है।

व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से उन्होंने विद्यार्थियों में श्रम के प्रति सम्मान, अनुशासन तथा उत्पादक कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास किया।

उनके विचारों में श्रम और शिक्षा एक-दूसरे के पूरक थे। यही कारण है कि उनकी शिक्षा नीति केवल ज्ञान-केंद्रित नहीं, बल्कि कार्य-केंद्रित भी थी।

10. आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में योगदान

शाहूजी महाराज का अंतिम उद्देश्य समाज को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना था। वे जानते थे कि केवल सामाजिक सुधार पर्याप्त नहीं है; आर्थिक सशक्तिकरण भी आवश्यक है।

व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से उन्होंने युवाओं को रोजगार, उत्पादन, उद्यमिता तथा स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया। इससे समाज के अनेक वर्ग आर्थिक रूप से सशक्त बने तथा उनमें आत्मसम्मान की भावना विकसित हुई।

यही कारण है कि शाहूजी महाराज को केवल समाज सुधारक ही नहीं, बल्कि कौशल आधारित शिक्षा के प्रारंभिक प्रवर्तकों में भी गिना जाता है।

वर्तमान संदर्भ में शाहूजी महाराज के व्यावसायिक शिक्षा संबंधी विचारों की प्रासंगिकता

राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज के शैक्षिक विचार केवल उनके शासनकाल तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आज भी भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए समान रूप से प्रासंगिक हैं। इक्कीसवीं शताब्दी में वैश्वीकरण, उदारीकरण, डिजिटलीकरण तथा ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था के विकास ने शिक्षा के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। आज केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं माना जाता, बल्कि कौशल, नवाचार, उद्यमिता तथा तकनीकी दक्षता को भी समान महत्व दिया जा रहा है। इस दृष्टि से शाहूजी महाराज की व्यावसायिक शिक्षा संबंधी अवधारणा अत्यंत दूरदर्शी सिद्ध होती है।

(क) राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (NEP-2020) विद्यालय स्तर से ही व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास, इंटर्नशिप तथा अनुभवात्मक अधिगम पर बल देती है। नीति का लक्ष्य वर्ष 2025 तक कम-से-कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा से जोड़ना है। शाहूजी महाराज ने एक शताब्दी पूर्व ही शिक्षा को रोजगार एवं उत्पादन से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया था। वे चाहते थे कि विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ किसी उपयोगी कौशल में भी दक्ष हों। इस प्रकार उनके विचार NEP-2020 की मूल भावना के अनुरूप हैं।

(ख) कौशल भारत मिशन (Skill India Mission)

भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया कौशल भारत मिशन युवाओं को उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षित करने का प्रयास है। शाहूजी महाराज ने भी युवाओं में तकनीकी दक्षता, हस्तकौशल तथा व्यावसायिक योग्यता विकसित करने पर बल दिया। उन्होंने श्रम को सम्मान प्रदान करते हुए यह स्पष्ट किया कि आर्थिक आत्मनिर्भरता का आधार कौशल है।

(ग) आत्मनिर्भर भारत अभियान

आत्मनिर्भर भारत का मूल उद्देश्य देश को उत्पादन, उद्यमिता तथा नवाचार के क्षेत्र में सशक्त बनाना है। शाहूजी महाराज का संपूर्ण शैक्षिक दर्शन इसी अवधारणा पर आधारित था। वे चाहते थे कि प्रत्येक नागरिक अपने ज्ञान एवं कौशल के आधार पर सम्मानपूर्वक जीवनयापन कर सके तथा समाज के आर्थिक विकास में योगदान दे।

(घ) स्टार्टअप एवं उद्यमिता

आज भारत में स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा दिया जा रहा है। उद्यमिता के लिए तकनीकी ज्ञान, प्रबंधन कौशल तथा व्यावसायिक दक्षता आवश्यक है। शाहूजी महाराज ने भी स्वरोजगार एवं उत्पादन आधारित शिक्षा का समर्थन किया था। यद्यपि उनके समय में "स्टार्टअप" शब्द प्रचलित नहीं था, तथापि उनकी शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य आत्मनिर्भर एवं उद्यमी समाज का निर्माण था।

(ङ) समावेशी शिक्षा एवं सामाजिक न्याय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 शिक्षा में समान अवसर, समावेशन तथा सामाजिक न्याय पर बल देती है। शाहूजी महाराज ने अपने शासनकाल में दलितों, पिछड़े वर्गों, महिलाओं तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए छात्रवृत्तियों, छात्रावासों एवं शैक्षिक सहायता की व्यवस्था कर इन सिद्धांतों को व्यवहार में उतारा। इस दृष्टि से वे समावेशी शिक्षा के अग्रदूत माने जा सकते हैं।

आलोचनात्मक विश्लेषण

राजर्षि शाहूजी महाराज के व्यावसायिक शिक्षा संबंधी योगदान का मूल्यांकन करते समय उनके ऐतिहासिक संदर्भ को ध्यान में रखना आवश्यक है। उन्होंने सीमित संसाधनों और औपनिवेशिक शासन की परिस्थितियों में कार्य किया, फिर भी शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की।

उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने व्यावसायिक शिक्षा को केवल आर्थिक विकास का साधन नहीं माना, बल्कि सामाजिक न्याय का माध्यम भी बनाया। उन्होंने शिक्षा को समाज के वंचित वर्गों तक पहुँचाने के लिए छात्रावास, छात्रवृत्ति तथा आरक्षण जैसी नीतियों का सहारा लिया। इससे शिक्षा का लोकतंत्रीकरण हुआ।

हालाँकि यह भी सत्य है कि उनके अनेक प्रयास कोल्हापुर रियासत तक सीमित रहे और तत्कालीन औपनिवेशिक शासन के कारण उनका व्यापक राष्ट्रीय विस्तार नहीं हो सका। यदि उनके शिक्षा मॉडल को तत्कालीन भारत के अन्य क्षेत्रों में व्यापक रूप से अपनाया जाता, तो संभवतः भारत में कौशल-आधारित शिक्षा का विकास और अधिक तीव्र गति से होता।

कुछ विद्वानों का मत है कि शाहूजी महाराज के व्यावसायिक शिक्षा संबंधी विचारों का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण अपेक्षाकृत कम हुआ है। परिणामस्वरूप उनके अनेक शैक्षिक योगदान राष्ट्रीय स्तर पर उतने व्यापक रूप से चर्चित नहीं हो सके, जितने कि अन्य समाज सुधारकों के। इसलिए उनके योगदान पर और अधिक शोध एवं अभिलेखीय अध्ययन की आवश्यकता है।

फिर भी उपलब्ध ऐतिहासिक साक्ष्य स्पष्ट करते हैं कि उन्होंने व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण, औद्योगिक विकास तथा सामाजिक समावेशन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया, जिसने आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

निष्कर्ष

राजर्षि छत्रपति शाहूजी महाराज भारतीय शिक्षा इतिहास के उन महान व्यक्तित्वों में से हैं जिन्होंने शिक्षा को सामाजिक न्याय, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा लोकतांत्रिक विकास का सबसे प्रभावी माध्यम बनाया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का साधन नहीं, बल्कि व्यक्ति को जीवनोपयोगी कौशल, आत्मविश्वास तथा सम्मानजनक आजीविका प्रदान करने का माध्यम है।

व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान बहुआयामी था। उन्होंने तकनीकी एवं औद्योगिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया, कृषि शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया, छात्रावासों एवं छात्रवृत्तियों की व्यवस्था की तथा वंचित वर्गों को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराए। उनके प्रयासों ने शिक्षा को उत्पादन, रोजगार तथा सामाजिक न्याय से जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण आधार तैयार किया।

आज जब भारत राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, कौशल भारत मिशन, डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत जैसी योजनाओं के माध्यम से कौशल-आधारित शिक्षा को बढ़ावा दे रहा है, तब शाहूजी महाराज की शैक्षिक दृष्टि और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। उनकी शिक्षा नीति समावेशी, रोजगारोन्मुख, कौशल-केंद्रित तथा मानवतावादी थी। इसलिए उनके विचार आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए प्रेरणास्रोत हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि राजर्षि शाहूजी महाराज केवल एक प्रगतिशील शासक या समाज सुधारक ही नहीं, बल्कि भारत में व्यावसायिक शिक्षा के प्रारम्भिक

एवं दूरदर्शी प्रवर्तकों में भी अग्रणी स्थान रखते हैं। उनके सिद्धांत आज भी कौशल विकास, सामाजिक न्याय तथा समावेशी शिक्षा की नीतियों के लिए मार्गदर्शक हैं।

संदर्भ सूची

1. Government of India. *Skill India Mission: Policy Documents*. New Delhi.
2. Government of Maharashtra. *Reports on Educational Reforms in Kolhapur State*.
3. Government of Maharashtra. *Shahu Chhatrapati: Selected Speeches and Orders*. Mumbai.
4. Ministry of Skill Development and Entrepreneurship. (2023). *Annual Report*. Government of India.
5. UNESCO. (2021). *Reimagining Our Futures Together*. Paris.
6. University Grants Commission. (2020). *Quality Mandate for Higher Education Institutions*. New Delhi.
7. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.
8. MHRD. (2019). *Draft National Education Policy*. New Delhi.
9. Kumar, K. (2018). *Education and Social Change in India*. New Delhi.
10. Kumar, A. (2017). *Vocational Education in India: Challenges and Prospects*. New Delhi.
11. UNESCO. (2015). *Technical and Vocational Education and Training*. Paris.
12. Jadhav, R. (2014). *Rajarshi Shahu Maharaj and Social Justice*. Kolhapur.
13. Deshpande, S. (2013). *Contemporary India: A Sociological View*. Penguin.
14. Sharma, R. C. (2012). *History of Indian Education*. New Delhi.
15. Aggarwal, J. C. (2010). *Development of Education System in India*. New Delhi.
16. Thorat, S., & Newman, K. (2010). *Blocked by Caste*. Oxford University Press.
17. Pawar, J. V. (2009). *Shahu Chhatrapati: A Visionary Ruler*. Mumbai.
18. NCERT. (2005). *National Curriculum Framework*. New Delhi.
19. Omvedt, G. (2004). *Ambedkar: Towards an Enlightened India*. Penguin.
20. Tilak, J. B. G. (2003). *Education, Society and Development*. New Delhi.
21. Singh, Y. (1997). *Social Change in India*. Rawat Publications.
22. Phadke, Y. D. (1991). *Social Reformers of Maharashtra*. Mumbai.
23. Ambedkar, B. R. (1989). *Dr. Babasaheb Ambedkar: Writings and Speeches* (Vols. 1–17). Government of Maharashtra.
24. Keer, D. (1976). *Rajarshi Shahu Chhatrapati*. Popular Prakashan.
25. Naik, J. P. (1975). *Equality, Quality and Quantity*. Allied Publishers.

Cite this Article:

वर्मा, नीरज, पटेल, डॉ० अखिलेश . (2026). छत्रपति शाहूजी महाराज का व्यावसायिक शिक्षा में योगदान : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. The Research Dialogue, 5(2), 407–414., Volume-05, Issue-02, July-2026.
DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.43

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

नीरज वर्मा[1], डॉ० अखिलेश पटेल[2]

छत्रपति शाहूजी महाराज का व्यावसायिक शिक्षा में योगदान : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73/ 6.79)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.43